आनंद कुमार

'सुपर 30' के संस्थापक की संघर्षगाथा

"अगर व्यक्ति का हौसला बुलंद हो तो संसाधनों की कमी और परिस्थितियाँ बाधक नहीं होतीं।" इस कथन को 'सुपर 30' के संस्थापक आनंद कुमार ने सच कर दिखाया है।

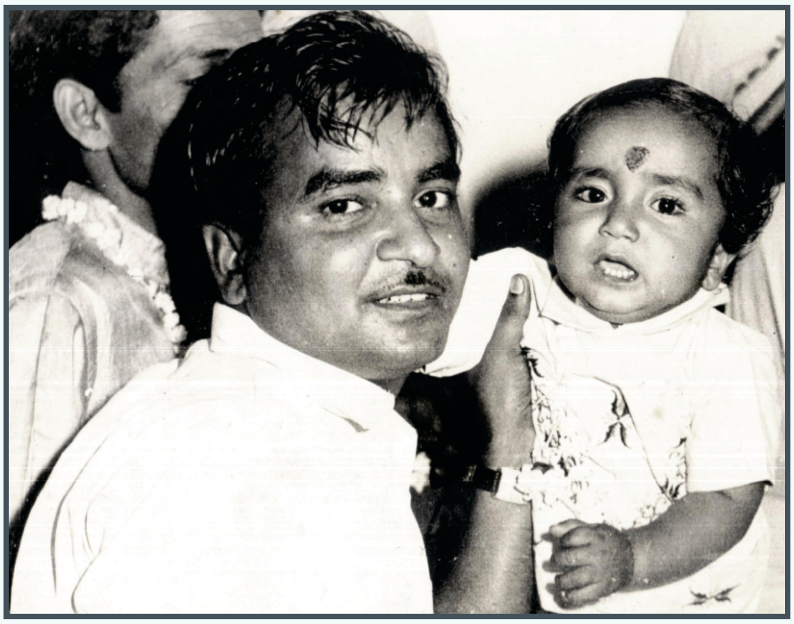
अपने पहले जन्मदिन पर पिताजी की गोद में आनंद कुमार

आनंद कुमार पटना में गरीब बच्चों को गणित पढ़ाते हैं और उन्हें IIT-JEE परीक्षा के लिए तैयार करते हैं।

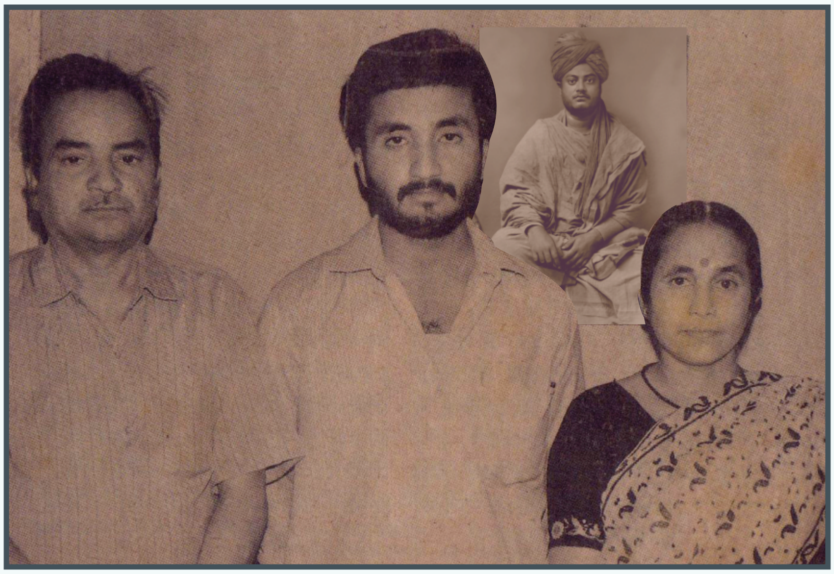
युवा आनंद कुमार अपने माताजी व पिताजी के साथ

उनके संस्थान का नाम 'सुपर 30' है। इसकी स्थापना वर्ष 2002 में हुई और पहले ही वर्ष 30 में से 18 विद्यार्थी आई.आई.टी. में सफल हुए। भट्ठा मजदूर, ऑटोरिक्शा ड्राइवर, सड़क के किनारे सब्जी बेचने वाले, बेरोजगार या फिर भूमिहीन किसान के बेटे को

आई.आई.टी. में प्रवेश दिलाने का श्रेय आनंद कुमार को ही जाता है। वर्ष 2008 में 'सुपर 30' के सभी 30 विद्यार्थी जे.ई.ई. उत्तीर्ण करने में सफल रहे और इसने अपना अंतिम लक्ष्य हासिल कर लिया।

एक कार्यक्रम में बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार के साथ आनंद कुमार

आनंद कुमार का जन्म पटना के निम्न-मध्यम परिवार में हुआ। उनके पिता डाक-विभाग में एक क्लर्क थे। संयुक्त और बड़ा परिवार होने के कारण हमेशा पैसों का अभाव रहता था, इसलिए आनंद को अंग्रेजी स्कूल में पढ़ाने का सोचा भी नहीं गया। उनकी पढ़ाई पटना के हिंदी माध्यम स्कूल में हुई। पढ़ाई के दौरान ही गणित की ओर उनका रुझान बढ़ा और वे दिन-रात गणित के सवालों को अलग-अलग तरह से हल करते रहते।

अपने आदर्श गुरु पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के साथ

जब बच्चे क्रिकेट खेल रहे होते तो वे गणित और विज्ञान में खोए रहते या महान् वैज्ञानिकों की जीवनियाँ पढ़ रहे होते। उन्हें विज्ञान के मॉडल बनाना भी पसंद था,

तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह से देश की शिक्षा प्रणाली पर चर्चा करते हुए

लेकिन उन्होंने नौंवी कक्षा तक आते-आते एक बात अच्छी तरह से समझ ली थी कि अगर उन्होंने गणित पर अधिकार कर लिया तो वे अपने सपने साकार कर सकते हैं।

दसवीं के बाद आनंद को पटना विश्वविद्यालय से संबद्ध 'बिहार नेशनल कॉलेज' में प्रवेश मिल गया, लेकिन 12वीं कक्षा तक वे यह निर्णय नहीं कर पाए कि उन्हें क्या बनना है। लेकिन एक बात के लिए जरूर उनके इरादे पक्के थे—गणित का विशेषज्ञ बनना।

इसी दौरान पटना विश्वविद्यालय में विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. देवी प्रसाद वर्मा से आनंद का संपर्क हुआ। आनंद अपने नए विचार और नए सूत्र उनके साथ बाँटते। डॉ. वर्मा युवा आनंद का उत्साह बढ़ाते।

तत्कालीन लोकसभा स्पीकर श्रीमती मीरा कुमार के साथ वर्ष 2011 की विजेता टीम

उन्होंने आनंद के काम का न केवल मूल्यांकन किया, बल्कि उनका हौसला भी बढ़ाया। उनके कुछ कामों को विदेश की गणित की पत्रिकाओं में भेजा। उनमें से एक सम्मानजनक ब्रिटिश जर्नल 'मैथमैटिकल गैजेट' थी। जी.एच. हार्डी उसके संपादक रह चुके थे, जो रामानुजन के अध्यापक के रूप में जाने जाते थे।

मध्य प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के साथ एक कार्यक्रम में चर्चा करते हुए

आनंद द्वारा बनाए गए मैथमैटिकल प्रॉब्लम इन जर्नल्स में छपे तो उनका उत्साह बढ़ा। सन् 1994 में उन्होंने स्नातकोत्तर के लिए कैंब्रिज यूनिवर्सिटी में आवेदन किया, तो उच्च शिक्षा के लिए एडमिशन तो मिला, किंतु छात्रवृत्ति नहीं मिली। परिवार में खर्च उठाने की सामर्थ्य नहीं थी। आनंद

वर्ष 2011 के IIT प्रवेश परीक्षा में सफल हुए 30 छात्रों के साथ ऐतिहासिक इंडिया गेट पर विजयी मुद्रा में

के पिता ने डाक-विभाग से सहायता की याचना की। डाक-विभाग ने केवल 50,000 रुपए की मंजूरी दी। इसके पहले कि धन उन तक पहुँचता, तभी एक अनहोनी हो गई। 23 अगस्त, 1994 को आनंद के पिता का अचानक निधन हो गया।

दोहा में एक विशिष्ट सभा को संबोधित करते हुए

उनके पिता बिल्कुल स्वस्थ थे। पहले कोई बीमारी नहीं थी। वे घर आए, खाना खाया, सोने गए और कुछ मिनट बाद वे नहीं रहे। एक रात में सबकुछ बदल गया। आनंद पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा। ऐसा लगा मानो जीवन में कुछ नहीं बचा हो। सारे परिवार की जिम्मेदारी उनके कंधों पर आ पड़ी।

आनंद ने तय कर लिया कि वे कैंब्रिज नहीं जाएँगे। पटना में ही रहेंगे और परिवार को सहारा देंगे। पिता के सहकर्मियों ने राय दी कि वे अपने पिता के बदले डाक-विभाग में नौकरी कर लें, लेकिन आनंद नौकरी के पीछे अपनी पढ़ाई और अपना गणित-प्रेम नहीं छोड़ सकते थे।

अमेरिका में सुविख्यात गणितज्ञ पीटर वाचुस्का के साथ आनंद कुमार

ऐसी विषम स्थिति में आनंद की माँ ने समझदारी से काम लिया और उनका हौसला बढ़ाया। वे घर में पापड़ बनाने लगीं। इनका नाम 'आनंद पापड़' रखा गया। पढ़ाई से फुरसत निकालकर शाम के वक्त आनंद

जापान के एक प्रतिष्ठित चैनल ने आनंद कुमार के ऊपर एक Documentary बनाई।
फिल्म यूनिट के साथ आनंद कुमार

भी घर–घर जाकर पापड़ बेचने लगे। उनकी माँ कुछ औरतों के साथ मिलकर घर में ही पापड़ बनाती थीं। जो धन आता, वह घर चलाने के काम आता।

परिवार के लिए अतिरिक्त धन कमाने के लिए उन्होंने गणित की ट्यूशन भी आरंभ कर दी। जैसा कि पहले ही बताया गया है, आनंद को पढ़ने का बहुत शौक था, लेकिन पटना विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में विदेशी जर्नल्स नहीं मिलते थे, इसलिए वे हर शुक्रवार की रात को छह घंटे की ट्रेन यात्रा करके बनारस जाते थे, जहाँ उनका छोटा भाई पढ़ता था। दो दिन शनिवार और रविवार बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी के केंद्रीय पुस्तकालय से अपनी पसंदीदा पुस्तकें लेकर पढ़ते, उनके नोट बनाते और रविवार की रात को ट्रेन पकड़कर सोमवार की सुबह तक वापस पटना पहुँच जाते, यह क्रम लंबे समय तक चलता रहा।

तत्कालीन केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल द्वारा सम्मान प्राप्त करते आनंद कुमार

वर्ष 1992 में आनंद विद्यार्थियों को गणित पढ़ाने लगे थे। उन्होंने 500 रुपए महीने के किराए पर एक कमरा लिया और अपने 'रामानुजन स्कूल ऑफ मैथमैटिक्स' (आर.एस.एम.) की शुरुआत की। उन्होंने 2 छात्रों से अपनी कक्षा आरंभ की और 3 साल में यह संख्या बढ़कर 500-600 हो गई। सन् 2000 में एक बड़ा परिवर्तन आया। एक गरीब छात्र आनंद के पास आया कि उसे आई.आई.टी. प्रवेश परीक्षा की तैयारी करनी है, लेकिन वह मोटी फीस नहीं चुका सकता। इसी से आनंद के मन में 'सुपर 30' की स्थापना का विचार कौंधा।

आनंद का गणित स्कूल अपनी फीस के लिए प्रसिद्ध था। वे केवल 500 रुपए प्रतिवर्ष लेते थे, जो उस समय भी बिहार के मानकों के हिसाब से बहुत कम थी। लोगों को आश्चर्य होता था कि वे इतना अच्छा पढ़ाने के बाद भी इतनी कम फीस क्यों लेते हैं। इतने पर भी अगर कोई विद्यार्थी कहता कि वह इतनी फीस नहीं दे सकता तो वे उसे निःशुल्क भरती कर लेते थे।

सन् 2002 में आनंद ने 'सुपर 30' की स्थापना की। इसमें 30 निर्धन,परंतु मेधावी छात्रों को लेना था, जो आई.टी.आई. की कोचिंग का खर्च वहन नहीं कर सकते थे।

कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया गवर्नमेंट के चल रहे विधान सभा सत्र में विधायक मार्क डाल्टन ने पिछले दिनों सुपर-30 के संस्थापक आनंद कुमार के संघर्षमय जीवन और उनकी उपलब्धियों के कारण सरकार के सामने आनंद कुमार को सम्मानित करने का प्रस्ताव रखा था, जोकि सर्वसम्मति से पारित कर दिया गया। साउथ एशियन कल्चर सोसाइटी द्वारा आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में विधायक मार्क डाल्टन ने सरकार की ओर से आनंद कुमार को प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया।

फिल्म आरक्षण के रिलीज होने पर सुपर स्टार अमिताभ बच्चन के साथ

फिल्म अभिनेता आमिर खान के साथ। आमिर खान ने अपनी फिल्म 'रंग दे बसंती' के एक स्पेशल टेलीविजन शो में 'सुपर 30' पर एक कार्यक्रम बनाया है

'सुपर 30' में उन्हीं को आई.आई.टी. में प्रवेश के लिए तैयार करना था।

योजना तैयार थी, उद्देश्य भी स्पष्ट था। कोई वित्तीय सहयोग नहीं था, किंतु एक अटूट भरोसा था, धन राह का रोड़ा नहीं बनेगा। जिस चीज की आवश्यकता थी, वह थी सफलता की भूख। कोई पैसा नहीं लिया जाता है। आनंद की माँ जयंती देवी ने इन 30 बच्चों को भोजन देने का बीड़ा उठाया। 30 विद्यार्थी मात्र मौखिक बातचीत और एक लिखित परीक्षा के आधार पर भरती किए गए और उन्हें कुछ कमरों में 2 और 3 के समूहों में टिका दिया गया।

कक्षाएँ टीन की एक छत के नीचे छोटे से कमरे

अपनी चीन यात्रा के दौरान CCTV News पर इंटरव्यू देते हुए

में शुरू हुईं। चूँ-चूँ करती बेंचें और लकड़ी के टुकड़े को काले पेंट से रँगकर ब्लैकबोर्ड बनाया गया था। इस बैच के सभी विद्यार्थी बहुत मेहनती और पसीना बहाने वाले थे। हर किसी को तब आश्चर्य हुआ, जब 30 में से 18 विद्यार्थी आई.आई.टी. में सफल हुए।

अगले बैच के लिए 1000 विद्यार्थियों ने आवेदन किया। एक लिखित परीक्षा ली गई। उसमें से 30 'सुपर' को चुना गया। वर्ष 2003 से 2009 के दौरान 210 में से 182 विद्यार्थियों को आई.आई.टी. में सफलता मिली, यानी 87 प्रतिशत सफलता। वर्ष 2008 में तो 30 के 30 विद्यार्थी सफल रहे और यह सिलसिला 2009 व 2010 तक जारी रहा।

जापान के अग्रणी अर्थशास्त्री एवं फिल्म निर्माता श्री योची इतोह के साथ आनंद कुमार व उनके छोटे भाई प्रणव कुमार

आनंद अपने 'सुपर 30' के लिए कहीं से भी वित्तीय

सहायता नहीं लेते, कोई मदद को आता भी है तो आदरपूर्वक मना कर देते हैं। वे 'सुपर 30' को अपने बलबूते ही जीवित रखना चाहते हैं और कुछ अमीर घर के बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर जो पैसा कमाते हैं, उसी से 'सुपर 30' का खर्च चलता है।

छात्रों को पढ़ाने में मग्न आनंद कुमार

आनंद को कुछ कोचिंग स्कूलों से लाखों-करोड़ों के प्रस्ताव मिले, जिन्हें उन्होंने ठुकरा दिया। उन पर कोचिंग माफिया से जुड़े लोगों ने हमले भी करवाए, लेकिन वे बच गए। आज सरकार ने उन्हें सुरक्षा दे रखी है। माफिया के हमलों से बचने के बाद भी उनकी परेशानी कम नहीं हुई। कई लोगों ने छात्रों को गुमराह करने के उद्देश्य से 'सुपर 30' नाम के कुछ आगे-पीछे जोड़कर नकली 'सुपर 30' संगठन का संचालन शुरू किया।

और तो और, ऐसे लोग कॉरपोरेट जगत् तथा सरकार से करोड़ों रुपए

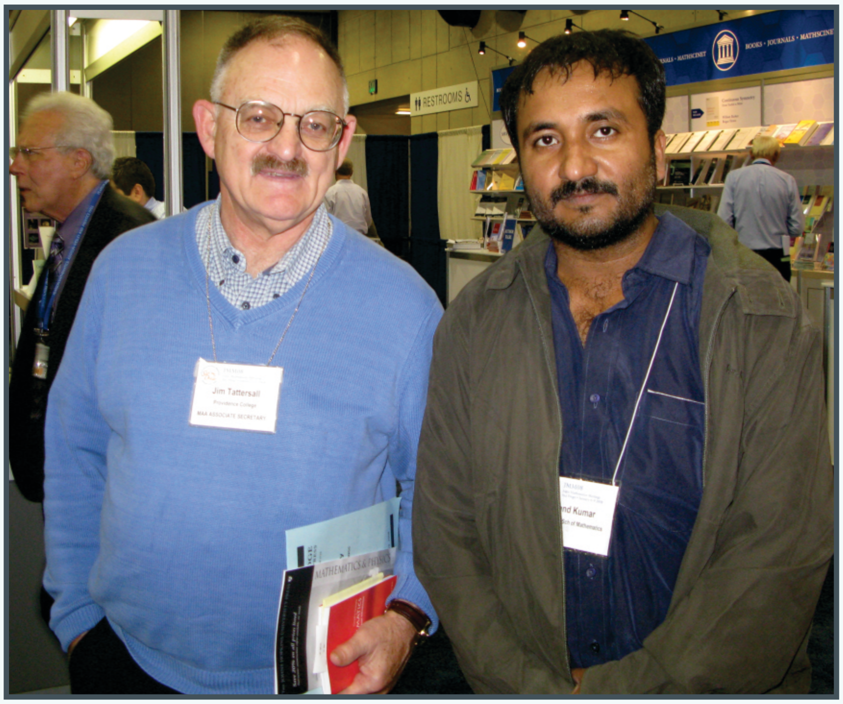

'द मैथमैटिकल एसोसिएशन ऑफ अमेरिका' के सेक्रेटरी जिम तातेरसाल के साथ अमेरिका के सैन दियागो शहर में आनंद कुमार। एसोसिएशन द्वारा आयोजित कॉन्फ्रेंस में आनंद कुमार ने गणित पर व्याख्यान दिए थे।

की उगाही करते हैं, जबकि 'सुपर 30' का मूल उद्देश्य है कि खुद मेहनत करके धनोपार्जन करना और उसी पैसे से 'सुपर 30' का संचालन करना।

आनंद के छोटे भाई एक संगीतकार हैं, पर वे 'सुपर 30' के संचालन में आनंद का भरपूर सहयोग करते हैं। आनंद भी अपने 'सुपर 30' को और बड़ा करने की सोच रहे हैं।

IIT में पास हुए छात्रों के उत्साह के क्षण

चर्चित होने के बाद आनंद मीडिया की सुर्खियाँ भी बने। मार्च 2009 में डिस्कवरी चैनल ने 'सुपर 30' पर एक घंटे का वृत्तचित्र प्रसारित किया। 'न्यूयॉर्क टाइम्स' में आधे पेज में 'सुपर 30' छाया रहा। बी.बी.सी. ने भी आनंद को अपने चैनल पर जगह दी। अहमदाबाद के प्रतिष्ठित इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ने व्याख्यान के लिए आनंद को अपने यहाँ आमंत्रित किया, जहाँ उन्होंने अपने खट्टे-मीठे अनुभव सुनाए। वर्ष 2009 में आनंद का नाम लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड में दर्ज हुआ। 'टाइम' पत्रिका ने 'बेस्ट ऑफ एशिया 2010' की सूची में आनंद के स्कूल 'सुपर 30' को जगह दी। 'इंस्टीट्यूट फॉर रिसर्च ऐंड डॉक्यूमेंटेशन इन सोशल साइंसेज' ने जुलाई 2010 में आनंद कुमार को वर्ष 2010 का 'एस. रामानुजन पुरस्कार' प्रदान किया।

पढ़ाई भी, मार्गदर्शन भी

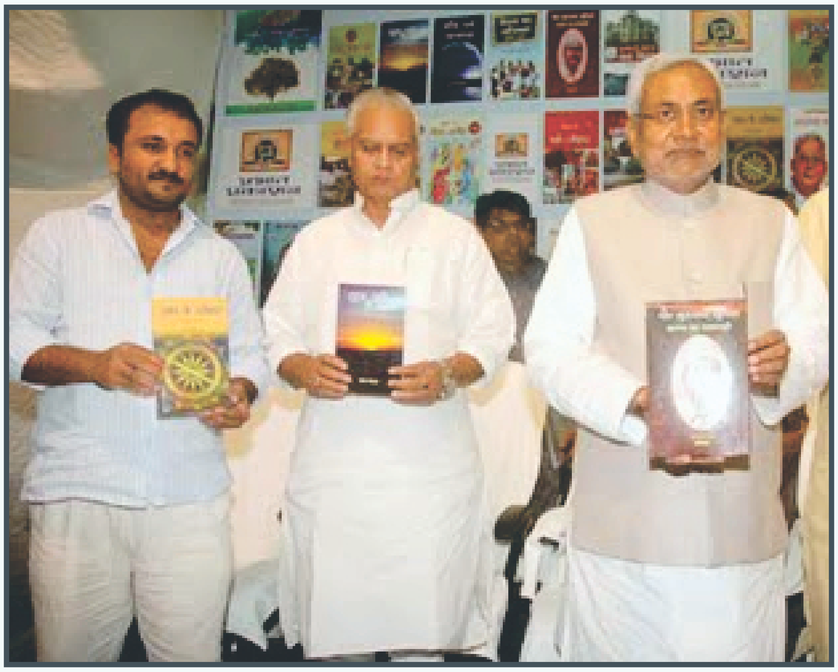

बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री के साथ एक पुस्तक लोकार्पण समारोह में

'सुपर 30' को विश्व प्रसिद्ध मैगजीन 'द न्यूज वीक' ने दुनिया के चार सबसे प्रयोगधर्मी स्कूलों में एक बताया, वहीं इटली के चर्चित पत्रिका 'फोकस' ने आनंद कुमार को विश्व में असाधारण प्रतिभाओं को तराशने वाले शिक्षकों की सूची में शामिल किया। लंदन के 'मोनोक्ले' मैगजीन ने तो दुनिया के 20 सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों की सूची में आनंद कुमार को शामिल किया है। आनंद कुमार के संघर्ष और उसके बाद सफलता की कहानी पर कई विदेशी चैनल ने डॉक्यूमेंटरी का प्रसारण किया है, जिसमें जापान का 'एन.एच.के.' चैनल, 'एन. टी.वी.', फ्रांस का 'फ्रेंच 24', अरब का 'अलजजीरा' प्रमुख है।

बिहार सरकार द्वारा प्रतिष्ठित 'मौलाना अब्दुल कलाम आजाद शिक्षा पुरस्कार' से सम्मानित होते हुए

संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा के विशेष दूत रशद हुसैन ने 'सुपर 30' को भारत का सर्वश्रेष्ठ स्कूल बताया। नवंबर 2010 में आनंद को बिहार सरकार ने अपने यहाँ के सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार 'मौलाना अब्दुल कलाम आजाद शिक्षा पुरस्कार' से

सम्मानित किया। बंगलौर में आनंद को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का वर्ष 2010 का 'प्रो. यशवंत केलकर युवा पुरस्कार' प्रदान किया गया।

'आरक्षण' फिल्म में प्रभावी भूमिका निभाने के लिए अमिताभ बच्चन ने आनंद कुमार की सहायता ली। उनके जीवन पर फिल्म बनाने के लिए अनेक बॉलीवुड निर्देशक लालायित हैं।

प्रसिद्ध उद्योगपति श्री मुकेश अंबानी के साथ। श्री मुकेश अंबानी ने आनंद कुमार को 'रियल हीरो' पुरस्कार से सम्मानित किया

आनंद कुमार के जीवन पर फिल्म बनाने पटना पहुँचे ब्रिटिश फिल्ममेकर क्रिस्टॉफर मिशेल के साथ

आनंद कुमार ने बचपन से ही गणितज्ञ बनने का सपना देखा। वे गणितज्ञ रामानुजन से बड़े प्रभावित रहे, इसलिए उन्होंने उन्हीं के नाम पर अपना कार्यक्रम शुरू किया। उन्होंने कई बार उनकी जीवनी पढ़ी और उन्हीं की तरह गणितज्ञ बनना चाहा, लेकिन आज वे कहते हैं कि वे

ऑस्कर पुरस्कार विजेता श्री रेसुल पुकुटी से सम्मान प्राप्त करते हुए

0.001 फीसदी भी उनकी (रामानुजन) तरह नहीं हैं।

हर बार किसी प्रायोजक के सहारे आनंद ने चार बार अमेरिका की यात्रा की। उनके यहाँ से पास हुए 236 विद्यार्थियों में से आज सभी अच्छी जगहों पर हैं। उनमें से अधिकांश आज भी उनके संस्थान में आकर विद्यार्थियों को प्रेरित करते हैं। भविष्य में वे 100/150 एकड़ का एक कैंपस स्कूल खोलने के प्रयास में हैं, जिसमें बच्चों को पहली से बारहवीं तक शिक्षा दी जाएगी और उन्हें नोबेल पुरस्कार जीतने के लिए रचनात्मक बनाया जाएगा।

आनंद का एक छोटा बेटा है। वे उसे गणित पढ़ने पर जोर नहीं देंगे। वे चाहते हैं कि वह अपनी मरजी का कुछ अच्छा और नया करे और अपने निर्णय स्वयं ले।

कई बार बड़े उद्योग घरानों के लोग और राजनेता उन पर अपने

टाइटैनिक और अवतार जैसी फिल्मों के मशहूर निर्माता-निर्देशक जेम्स कैमरून के साथ एक कार्यक्रम में आनंद कुमार

बीजिंग में आनंद कुमार को चीन इंटरनेशनल रेडियो में विशेष कार्यक्रम की रिकॉर्डिंग के लिए आमंत्रित किया

बच्चों को 'सुपर 30' में प्रवेश देने के लिए जोर डालते हैं, तब वे हाथ जोड़कर उनसे क्षमा माँग लेते हैं।

आनंद अनेक सम्मेलनों में आमंत्रित किए जाते हैं। डॉ. कलाम और प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह से भी उनकी भेंट हुई है।

आनंद की चुनौतियाँ अभी खत्म नहीं हुई हैं, बल्कि कहना होगा कि वे चुनौतियों को चुनते हैं और उन्हें अपनाकर सोते-जागते उन पर विजय प्राप्त करने की सोचते रहते हैं, और इस तरह वे चुनौतियाँ पार कर लेते हैं। आनंद कुमार देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी खूब लोकप्रिय हो गए हैं। आजकल विदेशों में भी इनके व्याख्यान को सुनाने के लिए छात्रों और युवाओं की काफी भीड़ जुट रही है।